ज़िला शिमला के पारम्परिक निबद्ध-अनिबद्ध लोकगीत

MEENA KUMARI

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से जिला शिमला भी एक जिला है। जो पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही आकर्षक है। यहां विभिन्न प्रकार के लोकगीतों का प्रचलन है जो मुख्यतः निबद्ध और अनिबद्ध दोनों प्रकार से गाये जाते हैं। निबद्ध अर्थात् बंधा हुआ होना और अनिबद्ध अर्थात् जो व्यवस्थित रूप में बंधा हुआ नहीं होता दूसरे शब्दों में अनिबद्ध शब्द के व्यवस्था का अभाव तथा अमर्यादित स्वरूप को भाव व्याप्त होता है। अनिबद्ध शब्द से यह अनुमान होता है कि कोई वस्तु तो है परन्तु उसको किसी चीज का बंधन नहीं है बंधा हुआ न होने के कारण उसका कोई निश्चित परिणाम नहीं होता न ही परिधि होती है तथा उसमें बंधन व्यवस्था कर पूर्व योजना का अभाव है। इस प्रकार यहां पर इन दोनों प्रकार के लोकगीतों का बहुत प्रचलन है। इन लोक गीतों को यहां विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है। यहां की संस्कृति के परिचायक इन लोकगीतों का यहां पर बहुत महत्त्व है।

बीज शब्द

शिमला, पारम्परिक निबद्ध लोकगीत, पारम्परिक अनिबद्ध लोकगीत

भूमिका

हिमाचल प्रदेश का जिला शिमला यह अपनी खूबसूरती के लिए बहुत जाना जाता है। यहां दूर-दूर से पर्यटक घूमने आते हैं, लुत्फ उठाते हैं। यहां बर्फ से ढके पहाड़ चारों तरफ दिखाई पड़ते हैं और जिला की शोभा बढ़ाते हैं इसका नाम मां श्यामला के नाम के आधार पर पड़ा यहा पर बहुत से पर्यटक स्थल हैं जाखू, तारा देवी मंदिर, कालीबाड़ी मंदिर, कुफरी एडवेंचर स्पोर्ट्स, जाखू मंदिर जिला शिमला ने प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ संस्कृति को आज भी संजोए रखा है। यहां पर लोग मेहनत पर विश्वास रखते हैं और अपनी संस्कृति पर विश्वास रखते हैं यहां का रेज़टा आज भी मशहूर है यहां पर शांत वातावरण है सुख है इंसानियत है मेल-मिलाप है एकता है। शिमला की लोक संस्कृति को बनाए रखने में आज की युवा पीढ़ी का बहुत योगदान रहा है। यहां की संस्कृति की पहचान यहां के लोकगीत है। यहां पर लोकगीतों के दो प्रकार प्रचलित हैं-निबद्ध और अनिबद्ध। लोकगीतों का यहां अपना ही एक विशेष महत्त्व है। जिन्हें यहा पर विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है।

लोकगीत का सामान्य परिचय

लोकगीत गीत का जीवन अमर है और नश्वर है उनका अस्तित्व समय की आधारशिला पर टिका है। समय के घात-प्रतिघातों से उसके मौलिक रूप में परिवर्तन होता रहता है एक समय ऐसा आता है जब उनके मौलिक भग्नावशेष रह जाते हैं। किन्तु प्राचीनता के हवस में नवीनता का उन्मेष लेकर लोकगीतों की परम्परा सतत प्रवाहमयी रही है। नए गीतों के साथ पिछले गीत धुलते जाते हैं नई पीढ़ी। पर भाव यही गीतों की परम्परा है। सदियों के घात-परिघात ने इसमें आश्रय

पाया जाता है। मन की विभिन्न स्थितियों ने इसमें अपने तानें बानें बुनें हैं। स्त्री-पुरुष ने थककर इसके माधुर्य में अपनी थकान मिटाई है। उनकी ध्वनि में बालक सोए हैं विधवाओं ने अपने एकांगी जीवन में रस पाया है। पथिक ने थकावटें पूरी की हैं। किसानों ने अपने बड़े-बड़े खेत जोते हैं मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाए हैं और मौजियों ने चुटकुले छोड़े हैं।

लोकगीत यथार्थ की भावभूति पर आधारित लोकगीतों के हृदय दगरों की वास्तविक अभिव्यक्ति वहां रहती हैं। इनमें गीतों में गोपनीयता का मितात अभाव होता है। अन्तयन से उत्पन्न होने वाले भावों का सहज एवं निश्चल अभिव्यक्तिरूप लोकगीतों की मुख्य विशेषता है। अलंकरण की कृत्रिम सुन्दरता के विपरीत स्वभाविक उक्तियों का सौंदर्य वहां लक्षित होता है। लोकगीत खंडिताएं और धाराएं नौछावर की जा सकती हैं क्योंकि ये निलंकार होने पर भी प्राणमयी हैं और वे भावनाओं से लदी होकर भी निष्प्राण हैं। यह अपने जीवन के लिए किसी शास्त्र विशेष की मुपापेत्री नहीं है और अपने आप में परिपूर्ण है।

लोकगीतों में लौकिक सभ्यता, संस्कृति, आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज एवं परम्पराओं मान्यताओं आदि का चित्रण रहता है। वास्तव में ये गीत युग का वर्णन कहे जा सकते हैं। लोकगीतों के लोक समाज की प्रत्येक घटना और प्रत्येक स्थिति अपने हर्ष विवादात्मक अस्तित्व के साथ सनिहित रहती है। इनका नाश होना हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी तथा दुःख में घटते कम में स्वरो का प्रयोग होता है।

लोकगीत का महत्त्व

लोकगीतों का बहुत अधिक महत्त्व है। लोकगीत का किसने रचा इसके रचयिता कौन थे कैसे लोकगीतों को महत्त्व मिला लोकगीतों का किसी ने तो रचा ही होगा यह मान्यता है जिसे अस्वीकारा नहीं जा सकता और लोकगीतों पर इसका प्रभाव नहीं पड़ता की इसकी रचना किसने की न ही महत्त्व पर कोई प्रभाव पड़ा या पड़ता है जैसे कि हम पहले ही कह चुके हैं कि लोकगीत केवल वही गीत कहलाते हैं जो लोक से सम्बन्धित होते हैं पहले लोग जब आपस में बातें किया करते थे आदिमानव जब धरती पर आया तो वह गीतों के द्वारा ही अपनी बात एक दूसरे तक पहुंचाते थे इस तरह भावनाओं को समझते थे। इस तरह धीरे-धीरे मनुष्य भाषा बोलने लगा। लोकगीतों से ही लोकवाणी का जन्म हुआ। कुछ लोगों का यह मानना है लोकगीतों का बहुत महत्त्व है। अपनी महत्त्वता को बनाए रखने के लिए लोकगीतों में हर समय बदलाव होना आवश्यक है अपने अलग-अलग अंदाज से लोकगीत अपना महत्त्व बनाए रखने में सफल होते हैं। इसी कारण अधिक लोकप्रिय भी बनते हैं या बने रहने में सहायक होते हैं।

स्थानीय बोलियां लोकगीतों के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं हो सकती क्योंकि ऐसा पहाड़ी लोकगीत में सुनभ्यता के कारण हो सकता है हिमालय क्षेत्र में लोकगीतों का बहुत महत्त्व है

क्योंकि यहां हर किलोमीटर की दूरी पर लोकगीतों में परिवर्तन देखने को मिलता है। यही परिवर्तन लोकगीतों को यह तत्वपूर्ण बनाने में सहायक है। हर जगह यहां हमें शिमला के लोकगीतों को यहां चम्बा में सुनेंगे चम्बा के मंडी मंडी के सोलन में सिरमौर के ठियोग में सुनने को मिलेंगे। यहां अलग-अलग क्षेत्र के लोकगीत अन्य क्षेत्र में अपनी महत्त्वता को हुए हैं। देश और काल भी परिस्थितियों के कारण लोकगीतों में परिवर्तन होता रहता है। पहाड़ी क्षेत्र के लोकगीत उतनें मधुर होते हैं जितनें यहां के पक्षियों का कलरव उतनें ही लहलाते-बलखाते लोकगीत होते हैं जैसे नदी-नाले लहलाते खेत होते हैं। यहां के लोकगीत में हिमालय की खूबसूरती सुनने व देखने को मिलती है। प्रकृति की सुन्दरता को लोकगीतों द्वारा सराहा जाता है। सारी खूबसूरती लोकगीतों द्वारा दर्शाई गई है यही कारण है कि यहां लोकगीत बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है।

कुछ लोकगीत हर्षोल्लास के होते हैं कुछ लोकगीत दुःख के क्षणों में कुछ लोकगीत किसी की खूबसूरती व्यान करते हैं। कुछ लोकगीत प्रेम पर आधारित होते हैं कुछ सलाह पर आधारित होते हैं कुछ कहने का तात्पर्य है कि लोकगीत हर तरह से गाए जाते हैं कि वह लोकगीत जिस चीज़ को स्पष्ट कर रहा हो मानो उसे सामने ही लाकर खड़ा कर दिया हो। इस गुण के कारण लोकगीत अपनी महत्त्वपूर्णता को बनाए रखने में सहायक है। शास्त्रीय पक्ष से जुड़ने के बाद लोकगीतों का और भी अधिक महत्त्व बढ़ गया है।

पारम्परिक लोकगीत निबद्ध/अनिबद्ध

निबद्ध लोकगीत

- 1 दासी लाड़िए पाटू ले बुणना लाला
दासी.....
दासी लाड़िए ऐंऊ बे देसो देई डिगणी
दासी.....
दासी गे लाड़िए मारे वे देसा ले आए
दासी.....

दासी एक लड़की का नाम है उसको कहा जा रहा है कि लाल रंग का पट्टु (चादर) अपने लिए बुनो दासी (दुल्हन) इस देस को छोड़कर हमारे देस में आ जाओ वही बसेरा करो तु हमारे देस में आकर रहो। यह शिमला जिला का पारम्परिक लोकगीत है।

स्वरलिपि

प निसा गरे | सारे गरे सा | गरे सारे गरे | सारे गरे सा

दा	सीगे	लाऽ	झीऽ	ऐऽ	ऽ	पौऽ	टूले	बूऽ	णऽ	नाऽ	ऽ
सा	सा	—	—	—	—	प	धनिप	गरे	सारे	गरे	सा
ला	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	सीगे	लाऽ	झीऽ	ऐऽ	ऽ
गरे	सारे	गरे	सारे	गरे	सा	सा	सा	—	—	—	—
पौऽ	टूले	बूऽ	णऽ	नाऽ	ऽ	ला	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

बाकी सभी पंक्तियां इसी धुन में गाई जाएगी।

2. केऊ देसा आए डाड़िए पारगू हो

केऊ देसा आए डाड़िए.....

केऊ देसा का तुये आए बाबूआ

तेऊ देसे का खाई—लाई बाबूआ

सो देसो केणो शोभला दिशा बाबूआ।।

यह भी पारम्परिक लोकगीत है तथा इसे सवाल जवाब कहते हैं। लड़की उनसे सवाल कर रही है जो उसे रिश्ता लेकर आए है वह पूछती है आप कहां से आए हो किस देस गांव से हो वहां क्या खाते हैं, पहनते हैं। वह देश कैसा दिखता है, कैसा लगता है।

स्वरलिपि

रेसा	रे	सा	निप	नि	सा
केऊ	दे	सा	आए	डाड़ि	ए
रेसा	रे	सा	सा	—	—
पारा	गू	ऽ	हो	ऽ	ऽ
रेसा	रे	सा	निप	नि	सा
केऊ	दे	सा	आए	डाड़ि	ए

बाकी की सारी पंक्तियां इसी धुन में गाई जाएगी।

अनिबद्ध लोक गीत

1. हाटू री.....

माईए रे तेरो होंदौ

मांदिरो ऊँचो ध्वजा देऊ ले पिरुणी.....हां....

मेरौ कोरी ले मोनारो ई.....

सोचौ.....

यह अनिबद्ध प्रकार का पारम्परिक गीत है यह ताल में बंधित नहीं है। यह पारम्परिक अनिबद्ध लोकगीत है। इसका अर्थ है कि हाटू की माता रानी तेरा मंदिर बहुत ज्यादा ऊंचाई पर स्थित है। मेरा मन हमेशा सच्चा रखना अच्छा रखना पवित्र रखना तुझे वहां आकर चुरनी चढ़ाऊंगा या चढ़ाऊंगी और तेरी पूजा करूंगा।

स्वरलिपि

ध ध साध सारेगम गग रेरे रेगम गग रेरेसा सारेगरेग सा-ध, पधनिधप सासा-ध सारे गरेग रेरेसा, रेगसासा

हा टू रीऽ माईऽए तेरो होंदौ मंदिरो ऊँचो घवजा देऊलेऽऽ पिऊणी, होऽऽऽऽ मेरौऽऽ, कोरी लेऽऽ मोनारो, ऽऽसूचौ

2. ठांडेआ पाणीया आंदा नांदा पीणू

इंदे शोटौ ला सभीऐ, हां.....

सौंगै नहीं बै कौसीयै नीणू

यह भी एक अनिबद्ध लोक गीत है जिसे यहां की लोक भाषा में लामण कहा जाता है। इस गीत में कहा गया है कि मानव जाति को एक न एक दिन इस शरीर को त्याग कर मृत्यु को प्राप्त होना है। सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है अपने साथ कुछ नहीं ले जाना है। अतः सभी को मिलजुल कर रहा चाहिए।

स्वरलिपि

ध ध साध सारेगम गग रेरे रेगम गग रेरेसा सारेगरेग सा-ध, पधनिधप सासा-ध सारे गरेग रेरेसा, रेगसासा

ठा डे आऽ पाणीया आं दा नांऽदा पीणू इंदेऽ शोटौला सभीऐ, हांऽऽऽऽ सौंगैऽऽ, नहीं बैऽऽ कौसीयै, ऽऽनीणू

निबद्ध लोकगीतों के साथ संगत के लिए सहायक पारम्परिक लोकवाद्य

लोकगीतों के साथ संगत के लिए जिला शिमला में सभी प्रकार के लोकवाद्य (अवनद्ध, घन, सुषिर) का प्रयोग किया जाता है जो इस प्रकार है:-

अवनद्ध वाद्य

ढोल

ढोल यह बिल्कुल ढोलक के आकार का होता है अंतर इसमें केवल इतना है कि ढोलक दोनों हाथ से बजता है तथा ढोल एक तरफ हाथ से बजता है तथा दूसरी तरफ ढंडे से बजता है। इसका आकार भी ढोलक की अपेक्षा बड़ा होता है। यह गले में पट्टी सी बांधकर लटकाकर बजाया जाता है। इसका वादन लोकगीतों के साथ विवाह शादियों, तथा मंदिरों में किया जाता है।

नगाड़ा

इसे दमानु का ही रूप माना जाता है। यह भी पुराने लोक वाद्यों में से एक है। इसे स्थानीय भाषा में नौगोढ़ा के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण भैंस की खाल द्वारा किया जाता है। इसकी पतली सतह में एक छेद होता है जिसमें घी डाल दिया जाता है तथा इसके भांग के पत्तों पर उल्टे तरीके से रखा जाता है। जब यह थोड़ा सूख जाता है तो तीन-चार घण्टे बाद बजाया जाता है। मंदिरों में सुबह की नौसात तथा शाम की नौवत के समय इसे बजाया जाता है। इस वाद्य से वीर रस की उत्पत्ति होती है यह वाद्य भी दिखने में बहुत आकर्षक होता है। इस पर भी सुन्दर-सुन्दर डिजाईन बनाए होते हैं। इसका वादन भी लोकगीतों के साथ किया जाता है। प्रायः नगाड़ा वाद्य के साथ ढोल वाद्य का वादन अवश्य किया जाता है। इनका संयुक्त वादन लोकगीतों या अन्य अवसरों पर किया जाता है।

सुषिर वाद्य

करनाल

यह वाद्य लोकगायन में सबसे प्राचीन और अदभुत वाद्य है। यह वाद्य धीरे-धीरे न जाने कहीं लुप्त होता हुआ नज़र आ रहा है क्योंकि ऐतिहासिक तौर पर हमें करनाल के कोई भी प्रमाण देखने या सुनने को नहीं मिल पा रहे हैं। यह पीतल तथा चांदी का बना होता है लेकिन उन्हें प्रोढ़ खोलकर ही शादी विवाह में इस्तेमाल करने की ईजाजत दी जाती है वह ईजाजत केवल देवता साहिब स्वयं देते हैं। यह वाद्य धातु की एक नली आकार का होता है जिसका अग्र भाग खुला तथा पिछे अपेक्षाकृत कम-कम होता जाता है।

रणसिंघा

यह भी तांबे, पीतल और चांदी से निर्मित वाद्य है। इसका निर्माण चादर को मोढ़कर किया जाता है। इसके अंदर का भाग कसाल जैसा खोखला होता है इसके हर भाग को कलात्मक रूप से ढाला जाता है। इसका भार लगभग तीन किलोग्राम होता है। आकार में यह वाद्य अंग्रेजी के 'अक्षर' के समान होता है। यह वाद्य सभी लोक वाद्य में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। इसे मंगल कार्यों शादी-विवाह, मेलों व मंदिरों में बजाया जाता है। इसे जब वादक फूंक मारता है तो तरह-2 की ध्वनि स्वर सुनाई पड़ती है।

शहनाई

यह सुषिर वाद्यों में से एक प्रसिद्ध वाद्य है। यह वाद्य बिलकुल करनाल जैसा दिखाई देता है। आगे से गोल तथा चौड़ी ऊपर से लम्बी तथा पतली होती है। स्थानीय भाषा में इसे सणार्ई के नाम से जाना जाता है। शादी-विवाह में अधिकतर इसे बजाया जाता है। यह एक लोक प्रिय वाद्य है। यह वाद्य लकड़ी तथा धातु दोनों से निर्मित होता है। इसमें स्वरों की उत्पत्ति के लिए छिद्र किए जाते हैं जिनकी संख्या लगभग छः या सात होती है और इन्हीं छिद्रों में से वादक फूंक द्वारा स्वरों की उत्पत्ति करता है।

घन वाद्य

ताली

यह पीतल की बनी होती है अधिकतर हमें यह भजन कीर्तन में अधिक बजती हुई देखने को मिलती है। लोकगीतों में, भजन में यह अधिकतर बजते हुए दिखाई देती है। यह प्लेट के आकार जैसी होती है तथा काफी भारी होती है तथा इनके अन्दर बीच में छिद्र करके धागे को दोनों तरफ पिरोया जाता है तथा उसी धागे के जरिये इसको पकड़कर बजाया जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जिला शिमला में लोकगीतों का बहुत प्रचलन है। यहां निबद्ध और अनिबद्ध दोनों प्रकार के गीतों को विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है। जिसके साथ संगत हेतु यहां के प्रमुख लोक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। लोक कलाकारों द्वारा इन गीतों को अपने अंदाज़ में गाया जाता है जो सुनने में बहुत ही मधुर प्रतीत होते हैं। अनिबद्ध लोकगीतों का भी यहां उतना ही महत्व है जितना की निबद्ध लोकगीतों का है।

सन्दर्भ

साक्षात्कार सूची

श्रीमती गीता गरलैक (लामण कलाकार), गांव व डाकघर कोटगढ़ तहसील कुमारसैन जिला शिमला हिमाचल प्रदेश 2019

श्री बेनु गोपाल कोतवाल, गांव पमलाई डाकघर थानेधान तहसील कुमारसैन जिला शिमला हिमाचल प्रदेश 2019

श्री खरलू राम झांगटा, गांव व डाकघर खोलीघाट तहसील ननखड़ी जिला शिमला हिमाचल प्रदेश 2019